



अघोरेश्वर निनाद

अघोरात्राऽपरो मन्त्रो नास्ति तत्वम् गुरौः परम्।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No-G-2/VSİ (E)-16/2022-24

युग-उद्धारक मुनि विज्ञानी। बाबा गौतम औघड़दानी।।



अघोरवाणी
यही खाली में सब कुछ, सर्वत्र, महान शक्ति छिपा हुआ है जिसमें हम हाथ चलाते हैं, पाँव चलाते हैं, चलते हैं, फिरते हैं, श्वास लेते हैं, श्वास छोड़ते हैं। यह हमारे सामने अवरुद्ध हो जायेगा तो हमारी जीवन शक्ति समाप्त हो जायेगी और यह जीवन लीला भी समाप्त हो जायेगी।

—पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

वर्ष-२६, अंक १८, वाराणसी

बुधवार ३० सितम्बर २०२६

सहयोग राशि ४.२५

अघोरपीठ में उमड़ा आस्था-विश्वास का जनसैलाब

अघोरपीठ बाबा कीनाराम स्थल यानी क्रीं-कुण्ड, वाराणसी में विगत दिनांक 17 सितम्बर 2026, गुरुवार को श्रद्धा-विश्वास को हृदय में संजोए इस प्राचीन स्थल पर बाबा कीनाराम के भक्त बाबा के छठी समारोह में उसी प्रकार आते हैं। जैसे भौर फूल की सुगंध से आकर्षित होते हैं और अपने थैले में पुष्प-पराग लेकर अपने जीवन एवं पारिवारिक में शहद घोल देते हैं।

प्राचीन समय से काशी को देवी-देवताओं के सिद्धपीठ के रूप में जाना जाता है। त्रैलोक्य से न्यारी काशी को स्वयं शंकर के त्रिशूल पर बसे होने का गौरव प्राप्त है। ऐसा प्राचीन आध्यात्मिक स्थान समस्त ब्रह्माण्ड में कही नहीं है। जहां के घाटों को उत्तरवाहिनी मां जाह्नवी कभी नहीं छोड़ती, जैसे शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में काशी विश्वनाथ को जल से परिपूरित करने के लिए लालायित हैं। इसी तरह क्रीं-कुण्ड, वाराणसी भी आदिकालीन प्रसिद्ध पीठ में गिना जाता है। जहां कि ऋषि विश्वामित्र, राजा हरिश्चन्द्र, सुमेधा ऋषि से लेकर देवादेव महादेव के स्वरूप बाबा कीनाराम की साधना स्थली एवं आज समाधि स्थली भी है। इस स्थान के बारे में वर्णन करना, पूरे ब्रह्माण्ड के वर्णन के समान है। अघोर संत बाबा कीनाराम जी की ख्याति दूर-देशों तक फैली हुई है। समाज में अनाचार, अत्याचार, मानव का मानव की गुलामी एवं अनेक प्रकार के कुशासन को दूर करने के लिए बाबा अपने चमत्कारों से चमत्कृत कर आताताइयों को भी सही मार्ग पर चलने को विवश कर देते थे। यही कारण था कि बाबा के निर्वाण दिवस 21 सितम्बर 1771 से लेकर आज तक उनका गुणगान एवं महात्म्य तथा

प्रसिद्ध उनके समाधि से विकरित होती रहती है। जिसके उपलक्ष्य में हर वर्ष भाद्र मास में शुक्ल पक्ष षष्ठी तिथि को छठीं समारोह का आयोजन विधि विधान से होता है।

काशी में शिव का निवास केदार खण्ड में गौरी केदारेश्वर साथ ही क्रीं-कुण्ड

जन्म के छठवें दिन मनाए जाने वाले छठी समारोह के तौर पर कई सौ सालों से मनाया जाता है। पूरी दुनिया के अघोर श्रद्धालुओं के साथ-साथ इस परंपरा के सभी साधु-संत महात्मा-साधक अनुयायी इस पर्व को अगाध आस्था और विश्वास के साथ मनाते हैं। यूं तो ये पर्व अघोर परंपरा



वाराणसी में भी है।

भगवान् शिव की रुद्र मुद्रा को परिभाषित करता, अघोर परंपरा का, यह आदि-अनादि कालीन सिद्धपीठ बाबा कीनाराम स्थल, क्रीं-कुण्ड आध्यात्मिक क्षेत्र का सिरमौर है। यह स्थान अघोर के वर्तमान पीठाधीश्वर अघोराचार्य महाराज बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी द्वारा सुशोभित किया जा रहा है। बाबा कीनाराम जी को अध्यात्म की दुनिया में साक्षात शिव की स्थूल काया के रूप में माना और जाना जाता है। इस स्थान पर प्रतिदिन हज़ारों लोग आते हैं। कुछ कौतूहल से, कुछ लोग दर्शन मात्र के लिए तो कुछ साधना की दृष्टि से यहां आते हैं। ये पर्व बाबा कीनाराम जी, के

के हरेक आश्रमों में उत्साह के साथ मनाया मनाया जा जाता है लेकिन बाबा कीनाराम जी की तपोभूमि और अघोर परंपरा विश्वविख्यात केंद्र, महान सिद्धपीठ, बाबा कीनाराम स्थल, क्रीं कुण्ड में इसका नज़ारा अदभुत होता है। इसी कड़ी में 17 सितंबर 2026 को लोकार्क छठ (लोकार्क षष्ठी) अपार जनसमुदाय की उपस्थिति में अगाध श्रद्धा व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। 17 सितंबर को सुबह आश्रम परिसर की साफ-सफाई और दैनिक आरती के बाद इंतज़ार शुरू हुआ बाबा कीनाराम जी, अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान् राम सहित परिसर में मौजूद अपने को समाधि और बाबा कीनाराम के पुनर्गामित स्वरूप और

इस सिद्धपीठ के वर्तमान (11 वें) पीठाधीश्वर अघोराचार्य महाराज बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी के दर्शन का। शिव के मूर्तिवत व समधि रूप के साथ-साथ शिव की स्थूल काया के वर्तमान स्वरूप को देखने की ललक हज़ारों दर्शनार्थियों के चेहरे पर साफ दिख रही थी। यहाँ एक जिक्र प्रासंगिक है। जाहिर है ये अविश्वसनीय दृश्य होता है। ऐसे में सुबह 9 बजे सम्पूर्ण संसार में समस्त अघोर परंपरा के सर्वमान्य आचार्य ईष्ट आराध्य तथा शिव की स्थूल काया माने जाने वाले बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी जैसे ही अपने कक्ष से बाहर आए तो घंटा, डमरू, शंख और हर हर महादेव के निनाद के साथ पूरा अघोर परिसर गगनभेदी उदघोष से गूँज उठा। अघोरपीठ में श्रद्धालुओं के बीच अजीब सी हलचल, लेकिन सौम्य अनुशासन बरकरार रहा। सभी औपचारिक पूजा-अर्चना के बाद अघोराचार्य महाराज बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी जैसे ही अपने विश्वविख्यात औघड़ तख्त पर विराजमान हुए, कतारबद्ध श्रद्धालुओं के बीच, अपने आराध्य की एक झलक पाने के लिये होड़ मच गयी। लेकिन अति संयमित आस्थावानों की भीड़ ने अपना संयम नहीं खोया और कतार में एक-एक कर अपने आराध्य गुरु दर्शन के साथ परिसर में मौजूद बाबा कीनाराम जी, अघोरेश्वर महाप्रभु सहित सभी समाधियों का दर्शन पूजन किया।

इस घोर आध्यात्मिक पर्व के मौके पर समाजिक संस्थान अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान की महिला मण्डल की तरफ से समाजिक सरोकार का एक कार्यक्रम, रक्तदान शिविर, का भी आयोजन किया गया। साथ ही भक्तों के बीच गुधनी एवं हलवा का वितरण भी होता रहा।

सम्पादकीय

गुरु क्या देते हैं?

औषड़ संतों का सानिध्य सदैव से ही भारतवर्ष के अलावा विश्व के प्रत्येक भाग में सूरज के किरणों की भांति मिलता रहा है। हर देश, काल व समय में निराले संत रमण करते ही रहते हैं, चाहे कोई पंथ, मजहब, संप्रदाय अथवा भूभाग हो; किसी न किसी रूप में ऐसे संतों की उपस्थिति होती आई है। विशेषकर अपने अखंड आर्यावर्त में तो हर काल में स्थिति परिस्थिति के अनुरूप समाज में ये सर्वोच्च सम्मान के प्रतीक रहे हैं। चाहे, ईशा मसीह हो, गुरु ग्रंथ के रचयिता गुरुनानक हो, शाक्त की पूजा करने वाले रामकृष्ण परमहंस, मूसा, बुद्ध, कबीर, सूर, तुलसी, अथवा आधुनिक युग के संत महात्मा हों। सब पर औषड़ यानी अघोर की कृपा आच्छादित गगन की भांति बनी रहती हैं, जैसा कि कबीरदास जी ने कहा है- **“वृक्ष कबहु नहिं फल भखै, नदी न संचय नीर, परमाथ के कारने साधुन धरा शरीर।”** महात्मा कबीर के कहने का तात्पर्य यह है कि संत समाज परहित के लिए ही इस धरा पर अवतरित होते हैं। इसीलिए वे उदार, सर्वकल्याण कारक एवं निर्विकार बने रहते हैं। प्रकृति में जैसे सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी यानी पंचतत्व के बिना प्राणी जीवित नहीं रह सकता, उसी प्रकार औषड़ संतों के बिना पृथ्वी पर रहना, जीवों के लिए अकारण सिद्ध होगा।

यद्यपि पूरे ब्रह्माण्ड में मानव को सर्वोत्कृष्ट प्राणी प्रकृति के द्वारा रचित किया गया है। इसी प्रकार संतों में औषड़ संत का सानिध्य समस्त संतों को भी प्राप्त होता है। **चाहे शैव साधक, वैष्णव साधक, शाक्त साधक अथवा स्मार्त साधक हो।** क्यों कि शिव के पंच मुख यानी तत्पुरुष, अघोर, वामदेव, ईशान, एवं सत्त्वोजात के रूप में ये ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के कार्य को सम्पादित करते हुए समस्त ब्रह्माण्ड के सृजन, परिवर्तन एवं परिमार्जन का कार्य सतत करते रहते हैं। ठीक उसी भांति जिस भांति पृथ्वी अपने धूरी पर भुवन भास्कर की परिक्रमा करती रहती है। जहाँ तक गुरु का प्रश्न है यह हर समाज में प्रारम्भ से ही अपनी प्रभावोत्पादकता को बनाए रखे हैं। अब विचारणीय प्रश्न यह है कि औषड़ संत जब गुरु के रूप में व्यक्ति द्वारा मान लिए जाते हैं तो उसका व्यक्ति के जीवन में क्या प्रभाव पड़ता है? गुरु व्यक्ति को क्या प्रदान कर देता है? जिसे वह अन्तर्मन में रह कर आनन्दित बना रहा है। वह कौन सी अलौकिक देन होती है जिसे औषड़ गुरु प्रदान कर अपने श्रद्धालुओं एवं अनुयायियों को सदा-सदा के लिए अपना बना लेता है। दृष्टांत स्वरूप गौ का अपने बछड़े से प्राकृतिक लगाव अथवा मां का अपने अबोध बालक के प्रति वात्सल्यता की भावना से समझा जा सकता है। इसीलिए कीनाराम अघोर परम्परा में 20वीं शताब्दी के विश्वविख्यात प्रचंड संत परमपूज्य अवधूत भगवान राम जी द्वारा अपने भक्तों को मां गुरु की अनुभूति कराकर इस पद को सदा-सदा के लिए अमर कर दिया गया है, जो न केवल प्राकृतिक है बल्कि बिना भेदभाव के समान रूप से मानव जाति के सर्वआलिङ्गन का है। मां गंगा की धारा में नहाने वाला चाहे जो कोई भी हो, अपने जीवन के किसी अवस्था में हो, उसे एक अद्भुत अनुभूति की प्राप्ति होती है, जो सर्वदा कल्याणकारी एवं अव्यक्त होती है। सूरदास जी ने दृष्टांत देते हुए गुरु शक्ति का बखान किया है। **“अवगति गति कछु कहत न आवै, ज्यों गूंगे मीठे फल को रस अंतर्गत ही भावै।”** यानी गुरु कृपा का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता, बल्कि अनुभूति से ही अनुमान लगाया जा सकता है। विशेष कर अपने भक्तों की आर्त-पुकार को सुनकर अघोरेश्वर की शक्ति चाहे जहाँ भी हो पलक झपकाते ही मिल जाती है। जिससे बड़े से बड़े विघ्न-बाधाओं में भी भक्त प्रहताद की भांति अघोर भक्त निर्भय, निष्कलुष व ज्यों का त्यों आनन्दित बना रहा है। यद्यपि कहीं कहीं समाज में भ्रांति स्वरूप अघोर को अछोभ के साथ जोड़ दिया जाता है। जब कि समाज में निकृष्ट मानी गई चीजों को उत्कृष्ट में बदलकर सदा के लिए उसे पावन एवं बनाने का श्रेय औषड़ संतों को ही जाता है।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (30300) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : नित्यानन्द उपाध्याय

9452713030, 9794487878

e-mail-Neenad@aghorpeeth.org

www.aghorpeeth.org

आसक्ति

पृ.3 का शेष

लम्बे लम्बे व्याख्यानों अथवा प्रवचनों का प्रचलन नहीं है। बल्कि मन भर ज्ञान से कण भर आचरण को महत्व देते हुए उसे साकार किये जाने पर ही जोर दिया जाता है। आसक्ति को अपनी वाणी में अघोरेश्वर महाप्रभु भगवान अवधूत राम जी के द्वारा कहा गया है कि **“आसक्ति ही मोह है, मोह ही बंधन है, ईश्वर शरण ही इस दुःख को काटता है।”** पूज्यपाद अघोरेश्वर आसक्ति को त्याज्य बताते हुए आगे स्पष्ट करते हैं कि - **“सुधर्मा! दुर्वासा के समान आसक्ति रहित लाभ और सत्कार, मान-अपमान सबमें समान रहना, सब कुछ भोगते हुए निष्काम निवृत्ति मार्ग में अनासक्त चलते रहना प्रवृत्ति मार्ग में थक कर बैठ जाने से श्रेयस्कर होता है। तुमने सुना है उन किंवदन्तियों को, उन जनश्रुतियों को जो सब कुछ भोगने के बाद भी निःभोग आहार करने वालों के विषय में प्रचलित है। सभी स्थितियों में ऐसे**

लोग निर्लिप्त भाव से रहते हैं। यही तो पूजा है सुधर्मा! मैं पुजारी, (पूजा के अरि) बनने को नहीं कहता हूँ, निवृत्ति मार्ग में ठहरने का कोई स्थान नहीं। प्रवृत्ति में थक जाने की बहुत कुछ संभावना है। सुधर्मा! सुन रहे हो?”

अघोरेश्वर महाप्रभु की उपरोक्त पंक्तियाँ गागर में सागर की भाँति समस्त समस्याओं का निराकरण करती हैं, जिसमें सांसारिक वस्तुओं के प्रति अनाधिकार घोषित किया गया है। क्योंकि आसक्त व्यक्ति दैवीय कृपा से कोशों दूर रहते हैं। वे कमजोर पड़ते जाते हैं। उनकी बुद्धि कलह में लिप्त हो जाती है जिससे विवेक भी प्रभावित होता है। अतः हमारी जाग्रत मानसिक अवस्था सदा इस आसक्ति रूपी आसुरी शक्ति से दूरी बनाये रखें ताकि हम भले बुरे के निर्णय करने में अपने को सक्षम व समर्थ पा सकें एवं जीवन रूपी गाड़ी को सुगम पथ पर स्वतंत्र रूप से चलायमान रखते हुए नित्य नयी-नयी उम्मीदों से अपने राह को अलंकृत करते रहें।

शारदीय नवरात्र प्रारम्भ 2026

11 अक्टूबर 2026	रविवार	प्रथमा (रात्रि 08:37 तक)
12 अक्टूबर 2026	सोमवार	द्वितीया (रात्रि 09:15 तक)
13 अक्टूबर 2026	मंगलवार	तृतीया (रात्रि 10:19 तक)
14 अक्टूबर 2026	बुधवार	चतुर्थी (रात्रि 11:51 तक)
15 अक्टूबर 2026	गुरुवार	पंचमी (रात्रि 01:43 तक)
16 अक्टूबर 2026	शुक्रवार	षष्ठी (रात्रि 03:48 तक)
17 अक्टूबर 2026	शनिवार	सप्तमी (देर रात्रि 05:56 तक)
18 अक्टूबर 2026	रविवार	अष्टमी (समस्त)
19 अक्टूबर 2026	सोमवार	अष्टमी (प्रातः 06:53 तक)
20 अक्टूबर 2026	मंगलवार	नवमी (दिन में 09:34 तक)

घट स्थापना : 11 अक्टूबर 2026, रविवार, दिन में 09:57 मिनट तक; अभिजीत मुहूर्त : 10.51 से 12:07 मिनट तक; महानिशा पूजन : 18 अक्टूबर 2026, रविवार को मनाया जाएगा।

पालनीय नियम

1. शील (ब्रह्मचर्य इन्द्रिय निग्रह) धर्म का पालन करें।
2. मौन (सन्तोष) धारण करें।
3. जमीन पर सोयें, अपने आसन पर न तो दूसरों को बैठने दें न तो सोने दें तथा दूसरे के आसन पर आप भी न बैठें।
4. तप से तामस वृत्ति की समाप्ति का प्रयास करें।
5. अल्पाहार (24 घण्टे में एक बार निमित्त रूप से) करें।
6. इष्ट देवता का जाप करें।
7. इष्ट देवता का पाठ करें।
8. इष्ट देवता का ध्यान करें।
9. संकल्प विकल्प रहित चित्त से रहें।
10. अपने शरीर एवं वाणी से कोई भी अपराध न करें।
11. किसी भी दिशा में इष्टदेव की अनुभूति कर साष्टांग करें।
12. माता, पिता, गुरु, तथा सज्जनों से नम्र व्यवहार करें।

तत्पश्चात् इन सभी क्रियाओं के फल को श्रीगुरु चरणों में अर्पित करें एवं जो फल प्राप्त हो, उसे इष्टदेवता को अर्पित करें। सदैव की भाँति अनुष्ठान कलश-स्थापना एवं अखण्ड दीप प्रज्वलित करें।

आसक्ति

चूकता। अतः पवित्र एवं ऊँची आत्माओं के सान्निध्य की किरणें हमें हर प्रकार से सुशोभित ही करती हैं। जबकि परनिन्दा उपहास की प्रवृत्ति गड्ढे में ढकलने के लिये उद्यत रहती है।

यह भी सर्वविदित तथ्य है कि विधाता द्वारा प्रत्येक प्राणी खासकर मनुष्यों को अपने अलौकिक ढाँचों में ढालकर, अलग-अलग गुणों, रूपों से आच्छादित कर अद्भुत रचा गया है। प्रत्येक व्यक्ति की मौलिकता का कोई सानी नहीं है। बशर्ते कि उसे हम निखार कर परिष्कार कर प्रखर कर लें। ताकि उस सुषुप्ता से हम ईश्वर के अनुगामी की भांति इस संसार में अपने सद्कार्य सद्प्रयोजन को सिद्ध कर सकें। किसी व्यक्ति को किसी दूसरे का प्रतिरूपण, नकल अथवा स्वांग करने की लालसा सदैव निष्फल बनाती है। प्रत्येक व्यक्ति के अपने अन्दर के अदम्य ऊर्जा को एकाग्र कर उसे कार्य रूप में परिणित किये जाने में अजस्र सिद्धि की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सकती है। क्योंकि बिना जल के अतल में गोता लगाये मोती प्राप्त करना दिवास्वप्न की भांति सालता रहता है। अच्छे लम्बे राह चलने वालों को पुरुषार्थी, अध्यवसायी व परिश्रमी की

श्रेणी से नवाजा जाता है। उन्हें धूर्तता अथवा चालाकी का सहारा नहीं लेना पड़ता। जबकि शार्टकट अथवा अल्प समय साधन से सब कुछ प्राप्त कर लेने वाले लालायित लोभियों को अन्ततः असफलता ही हाथ लगती है। उनका पलायनवादी मस्तिष्क अपने अभीष्ट के प्रति ईमानदारी नहीं बरतता। बल्कि छल छद्म के द्वारा वह प्राप्त कर लेना चाहता है जिसका वह अधिकारी नहीं होता। यदि येन-केन-प्रकारेण उसे अभीष्ट की प्राप्ति हो भी जाती है तो उनकी स्थिति सीढ़ी के सहारे लम्बे ऊँचे पेड़ पर चढ़े व्यक्ति की ही होती है जो कालान्तर में उतरने के लिये फड़फड़ाता रहता है एवं भांडा फूट जाने पर अपमान का भागी होता है। अतः शुद्ध, सच्चा साधक खरे सोने की तरह हर स्थिति परिस्थिति में अपने प्राकृतिक चमक को बनाये रखता है।

जबकि कृत्रिमता एवं स्वर्ण पालिश के उतरते, बदरंग होते देर नहीं लगती। जबकि बुद्धिमान सर्वदा विजयी की भांति

उच्च ललाट लिये अटल रहते हैं। उन्हें कर्तव्य, ईमानदारी एवं आत्मबल का भरोसा रहता है। उन्हें धूर्तता या शार्टकट चलने की ललक ही नहीं होती। हमारे राष्ट्र भारत भूमि की यह विशेषता है कि हमें उपहार स्वरूप विरासत में ऋषि, मुनियों, औषधों, औलियों, खेपाओं, परमहंसों द्वारा सुलभ, सहज मार्ग को दिखाया गया है। शास्त्रों में, उपनिषदों में विवरण है कि तत्कालीन समय में आसुरी शक्तियों को परास्त करने के लिये उनके संहार के लिये शक्तिस्वरूपिणी को दुर्गास्वरूप का वरण करना पड़ा है एवं शस्त्रों से सुसज्जित कर असुरों को धराशायी करने की भी आवश्यकता पड़ी है। महाभारत में विपुल रक्तपात की घटना कौरव राजा धृतराष्ट्र एवं महारानी गान्धारी के पुत्र मोह एवं आसक्ति के कारण ही घटित हुई थी। अपने सगे सम्बन्धियों, कुटुम्बों, परिवारजनों के दोषों को ढँकना, उनके गलत कृत्यों को भी न नकारना, कमजोरी एवं आसक्ति का ही कुपरिणाम था। जिसका कुफल कालान्तर में परिजनों के साथ ही साथ आसक्त व्यक्ति को भी

बखूबी भोगना पड़ता है। अतएव निरर्थक कपोल कल्पनाओं के स्वामी होकर यथार्थ से हटकर हम जी नहीं सकते। बल्कि निर्भीक, निरहंकारी, पौरुष युक्त, कर्तव्यनिष्ठ बनकर अपने को एवं परिजनों को ऊँचा उठाने में सफल हो सकते हैं।

आलस्य व प्रमाद को घोर शत्रु की भांति समझते हुए उससे सतत सतर्क रहने की भी आवश्यकता प्रबल होनी चाहिये। अन्यथा यह शत्रु हमारे गिनती के प्रकृति प्रदत्त सांसों को ऐसे चट कर जायेंगे जैसे लकड़ी को धुन या कपड़े को कीड़ा।

अतः मूल्यवान समय को सदैव महत्व देते रहने में ही भलाई है। आसक्ति का आक्रमण विभिन्न रूपों में हमारे ऊपर होता रहता है। इसका सरल निराकरण एवं सुगम मार्ग यह है कि हम अपने गुरु की वाणी को उनके द्वारा बताये गये संकेतों को शत प्रतिशत अपने जीवन में उतारने, अनुपालन करने, क्रियान्वित करने का शत-प्रतिशत प्रयास करते रहे क्योंकि अधोर दर्शन में ज्ञान से अधिक उसके क्रियान्वयन पर जोर दिया जाता है। घंटों

पृ.३ का शेष

विश्वास का फल

एक सन्त थे। त्याग और संयम ही उनका जीवन था। दूर-दूर तक उनकी ख्याति थी। उनका दर्शन करने बहुत से लोग आते थे। किसी दूर के गाँव में एक गरीब किसान रहता था। वह भी सन्त का भक्त था। मन ही मन उनको गुरु मान चुका था। उनके दर्शनों के लिये बेचैन रहता था, किन्तु जा नहीं पाता था। एक बार किसान ने अपने खेत में तरबूज बोए। साथी किसानों ने उसकी बड़ी हँसी उड़ाई।

तरबूज की खेती के लिये रेत मिला मिट्टी चाहिये। नमी भी चाहिये। किसान के खेत में न नमी थी, न वैसी मिट्टी। किसान ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। सन्त का स्मरण करके वह खेत को पानी देता रहा। उसका विश्वास रंग लाया। खेत में तरबूज की बेलें फैलने बढ़ने लगीं। समय पर बेलों में तरबूज लग गये। थोड़े ही दिनों में वे बड़े-बड़े हो गये। किसान फूला न समाया। उतने बड़े तरबूज गाँव में किसी न देखे भी न थे। जो देखता, दाँतों तले अंगुली दबा लेता।

तरबूज पक गये, तो किसान ने उन्हें तोड़ने की योजना बनाई। अपनी पत्नी के साथ आकर खेत में जुट गया। दिन ढले तक वे दोनों तरबूज तोड़ते रहे। सूरज छिपने लगा, तो किसान बोला—बस, अब रहने दो। जो बच गये

हैं, उन्हें कल तोड़ लेंगे। पत्नी बोली मेरा विचार है, हमें यह काम आज ही पूरा कर देना चाहिये। ऐसा न हो, रात में कोई बाकी तरबूज चुराकर ले जाये। यह सुनकर किसान हँसने लगा और बोला—यह खेत तो गुरु महाराज का है। चोरी होगा तो उनकी होगी। हम चिन्ता क्यों करें?

संयोग की बात। उसी रात नौ चोर किसान के खेत से होकर गुजरे। खेत में बड़े-बड़े पके तरबूज देखकर उनके मुँह में पानी भर आया। गर्मी की रात थी। उन्होंने सोचा—खेत में बैठकर तरबूज खा लें। फिर ताजा दम कर आगे बढ़ेंगे। ऐसा सोचकर प्रत्येक चोर ने एक एक तरबूज तोड़े, बीच में रख, घेरा बनाकर बैठ गये। चोरों के सरदार ने जेब से चाकू निकाला।

वह तरबूज काटने ही वाला था कि आहट हुई। उसने सामने देखा तो काटना भूल गया। थोड़ी दूर पर कोई लाठी लिये खड़ा था। सरदार तमककर अपने साथियों से बोला—पकड़ो उसे। सुनते ही घेरे में बैठे प्रत्येक चोर ने सामने की ओर देखा। उन्हें चारों ओर एक ही रंग रूप के कई आदमी लाठी ताने, खड़े दिखाई दिये। चोरों का साहस जवाब दे गया। जो जिधर

भाग सकता था, भाग खड़ा हुआ। बदहवासी में उन्हें यह भी न सूझा कि रास्ते में नाले और झाड़-झंखाड़ भी थे। कई चोरों को गिरने से चोटे भी आ गई। कुछ दूर जाकर वे एक जगह रुक गये। सभी का बुरा हाल था। चोरों की एक बूढ़ी नानी थी उसने धेवतों को रोते कराहते देखा तो हल्दी चूना ले आई। सभी चोरों पर हल्दी चूना लगाया तो और भी चीखने लगे। नानी ने उनसे पूछा—अरे, यह तो बताओ कि तुम लोगों यह हाल हुआ कैसे? चोरों ने उस सारी बात बता दी। नानी कुछ सोचकर बोली—उन तरबूजों के बारे में मैंने भी सुना है मगर उस खेत का मालिक तो बहुत ही गरीब है। तुमने उसे सताकर अच्छा नहीं किया। सबरे जाकर उससे क्षमा माँग लो।

सूरज निकलते ही चोर गिरते पड़ते किसान के घर पहुँचे। किसान अपनी पत्नी के साथ खेत पर चला गया था। चोर खेत पर गये। किसान के खेत में भीड़ लगी थी। चोरों ने सुना। किसान कह रहा था—बड़े अचरज की बात है ये नौ तरबूज टूटकर खेत के बीच कैसे आ गये? रात को खेत में कौन आया था? हम आए थे ऐसा कह कर सब किसान के पैरों पर गिर पड़े और माफी मांगने

लगे। किसान यह सुनकर हक्का-बक्का रह गया। उसकी समझ में पूरी बात तब आई, जब चोरों ने उसे रात वाली घटना सुना दी। चोरों की बात सुनकर किसान ने आकाश की ओर देखा और बोला मैं तुम्हें माफी देने वाला कौन होता हूँ। यह खेत तो गुरु महाराज का है। उन्हीं से जाकर माफी मांगों।

चोरों के अनुनय करने पर किसान उन्हें लेकर सन्त के पास पहुँचा। आश्रम में सन्त को देख, चोर परेशान हो गये और किसान से बोले—क्या यही वह सन्त है? उन्हें तो हमने आपके खेत की रखवाली करते देखा था। किसान ने यह सुना तो सन्त के चरणों में जा गिरा। उन्हें सारी बात बताकर पूछा—आपने मेरे लिये उतनी रात गये दुःख क्यों उठाया, गुरु महाराज! सन्त मुस्कराकर बोले यह तो तुम्हारे अटल विश्वास का फल था। विश्वास और श्रद्धा से सब कुछ सहज हो जाता है। चोर सहमे से एक ओर खड़े थे। सन्त ने उन्हें पास बुलाया और कहा—तुमने मेरे खेत से तरबूज तोड़े थे। उनका मुआवजा मुझे दो। चोर बोले—जो आप माँगेंगे, देंगे। अपनी चोरी की आदत मुझे दे दो—संत मुस्कराकर बोले। चोर नतमस्तक थे। उसके बाद से उन्होंने चोरी करना छोड़ दिया।

इस संसार में मनुष्य को उसके वास्तविक अधिकारों से वंचित करने वाले दुष्पार्थिव कारकों में आसक्ति का स्थान सर्वोपरि है। आसक्ति यानी लिप्तता या मानसिक लगाव, जो मानव को अनायास ही अपना दास बना डालती है उसकी सांसारिक पदार्थों, व्यक्तियों, वासना, लोभ, मोह के प्रति अत्याकर्षण या उसे न छोड़ने को उत्कंट इच्छा का ही दूसरा नाम आसक्ति है। ज्यों-ज्यों इसका आवरण जमा होता है, यह मानव को नितान्त कमजोर बनाती चली जाती है। यानी इसे दुःख कारक के रूप में ही स्थान दिया गया है। जैसे हमारे शरीर रूपी किले के दो मुख्य रक्षक जननेन्द्रिय एवं जिह्वा हैं। यदि ये किसी आसक्ति के प्रभाव में आ जाते हैं तो अनुशासन भंग होता है तथा पूरे किले यानी पूरा शरीर ही निरापद नहीं रह जाता, बल्कि वह शारीरिक दुश्मनों, बीमारियों, भय के, चपेट में आ जाता है। फलतः मोह, चंचल मन की प्रवृत्ति, व्यक्तित्व में असंतुलन बढ़ाता जाता है। फलतः हम नाना प्रकार के सांसारिक विघ्न बाधाओं से घिरकर अपने जीवन को असुर संग्राम बनाकर नर्क का वातावरण झेलने को मजबूर हो जाते हैं। “साधु इतना दीजिये जामे कुटुम्ब समाय” की स्थिति के विपरीत हमारे अन्दर घोर संग्रह की प्रवृत्ति घर कर लेती है। षड्विकारों से हम अनजाने में ही ग्रस्त हो जाते हैं एवं तब दिखावटी, पूजा-पाठ का भी कोई अर्थ नहीं रह जाता क्योंकि चंचल मन भटकत दिन राति की भांति ही भृगु मरीचिका के शिकार बन जाते हैं। अस्तु चुपके से किसी विकार खासकर किसी भी वर्ज्य पदार्थ, वस्तु के प्रति आसक्ति में न हम पड़ जायें, उसके लिये हमें सतत स्वयं पर ही सावधानी बरतनी होगी। प्रत्येक दिन मल एवं विष्टा की भांति कुविचारों, दुर्भावनाओं को अपने अन्दर से निकालते रहने को तत्पर रहना पड़ेगा, अन्यथा इनके विषाणुओं को फैलते देर नहीं लगती एवं अच्छा, सुन्दर सुरम्य जीवन भास्वरूप प्रतीत होने लगता है। जिसके जिम्मेदार हम स्वयं ही हैं। अतः हमारे

आसक्ति

जीवन को संवारने सुधारने के लिये परम आवश्यक है कि हम अपनी मानसिक स्वच्छता में आलस्य को स्थान न दे बल्कि निरन्तर अपने में प्रेम, नम्रता, सहनशीलता, सहिष्णुता के सदगुणों को भरें जिससे अनावश्यक अहंकार, दर्प, दंभ का समावेश हमारे ईश्वर प्रदत्त इस पवित्र किले में न हो सके, वरना हमारे परमात्मा का गर्भगृह यानी यह शरीर इन्हीं अवांछनीय तत्त्वों का जमावड़ा सिद्ध हो जायेगा। आसक्ति के विभिन्न भयावह रूप होते हैं। कृपणता, लोभ, अहंकार, काम, क्रोध, सभी विकार आसक्ति का ही परिणाम होता है। कबीरदास जी कहते हैं कि-

गाँठ दाम न बाँधेहि, नहिं नारी से नेह।

कह कबीरता साधु की हम चरनन के खेह॥

इसी प्रकार आसक्ति से दूर रहने एवं स्वयं को निर्लिप्त भाव से इष्ट में लगाने को हितकर बताते हुए तुलसीदास जी कहते हैं-

कामहिं नारी पियार जिमि,

लोभहिं प्रिय जिमि दाम॥

तिमि रघुनाथ निरन्तर,

प्रिय लागहिं मोहि राम॥

व्यक्ति का गुण ही है जो उसे साधारण व्यक्तित्व से अप्रतिम व्यक्तित्व की ओर मोड़ देता है अस्तु हमें अपने सामर्थ्यानुसार परोपकारिता, दानशीलता, क्षमाशीलता जैसे कारकों को अपनाना होगा एवं उसे कार्यान्वित करके अपने को कृतार्थ करते रहना होगा क्योंकि कर्म एवं प्रवृत्ति से ही मनुष्य की पहचान होती है। यह भी तथ्य है कि इन्हीं गुणों से सुसम्पन्न व्यक्ति को ईश्वर का कृपापात्र कहते हैं “**कर्म से ही सबकी पहचान, सबको सन्मति दे भगवान, सारा जग तेरी सन्तान**” के यथार्थ को हमें दृष्टिगत रखते हुए अपनी जीवन-यात्रा सफलता से जारी रखनी पड़ती है। कुसंगति, दुर्जनों के सान्निध्य से भी बचना हमारा कर्तव्य है अन्यथा बुरी चीजों के प्रति अनायास आकर्षण, आसक्ति, छिछले व्यक्तित्व के स्वामी के चंचल मन को प्रेरित कर अपनी ओर खींच कर हमें दुर्भाव एवं दुःशीलता से

दर-दर की ठोकर खाने एवं समाज में अपमानित जीवन जीने को बाध्य कर देता है। अतः अपने को, अपने विचारों को, अपने अस्तित्व को सदैव इस परीक्षण में गुजारते रहना होगा कि कहीं हमारे अन्दर किसी प्रकार की मलीनता घर न करने पावे। यानी किसी भी परिस्थिति में हमारा मन मस्तिष्क शांतचित्त प्रसन्न एवं अवमुक्त रहे; प्राणियों के प्रति सद्भावना बनी रहती है तो स्पष्ट समझिये कि अधोरेखर की कृपा दृष्टि निरन्तर हो रही है। यदि कहीं आलस्य, प्रमाद, ईर्ष्या, द्वेष, कलह, भेदभाव अथवा धृतराष्ट्री मोह घर कर रहा है, उत्पन्न हो रहा है तो समझिये महाप्रभु के द्वारा आपको चेतावनी का संकेत किया जा रहा है। अतः प्रतिदिन अपने पुरुषार्थ एवं प्रार्थना से हम महाप्रभु से यही कामना करें कि हमें मन, कर्म, वाणी से सदा अपने अनुकूल अपना अनुयायी बनावें, हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ती जाय, हमारा आत्मबल ऊँचा रहे, ताकि दुर्गुणों की प्रविष्टि न हो सके। नाना प्रकार के आसुरी प्रहरों से हम प्रभावित न हो बल्कि हममें इतनी क्षमता का विकास हो जिससे हम “**वयं राष्ट्रे जाग्रियाम पुरोहिताः**” के सच्चे अर्थों में संवाहक बन सकें। हमारे ईर्दगिर्द वातावरण सुविचारों से सुगन्धित होता रहे।

यह भी निर्विवाद है कि मानव जीवन धूप-छांव, रात्रि-दिवस की भांति परिवर्तनशील है। हर किसी को, कभी न कभी, किसी न किसी रूप में दुःखों का, दुसह्य परिस्थिति का सामना करना ही पड़ता है परन्तु वे इसे विधि का विधान समझ कर बखूबी झेल लेते हैं। जबकि कमजोर मानस का स्वामी विपरीत परिस्थितियों के समक्ष घुटने टेकने को मजबूर हो जाता है एवं सच्ची उपासना के मार्ग से दूर हो भटकते चले जाते हैं। उनका अधकचरा, अध्यात्मिक ज्ञान काफूर हो जाता है। वे उसी रटन्तू तोते की तरह सिद्ध हो जाते हैं जो निरन्तर प्रवाह में अपने जागते रहने के ज्यादा से ज्यादा समय में राम-राम रटता रहता था, परन्तु पिंजड़े पर ज्योंही बिल्ली का पंजा देखा

था, वह टाँय टाँय चिल्लाने लगता था। तात्पर्य यह है कि “**बिन विश्वास न कौनो सिद्धि**” के बिना हम सफलतापूर्वक जीवन यापन नहीं कर सकते। मार्ग की बाधाएँ हमें आंधी, तूफान, अनवरत वृष्टि, ओला वृष्टि की भांति सन्मार्ग से पदच्युत करने का भरसक प्रयत्न करती रहती हैं क्योंकि सुर एवं असुर संग्राम तो हमारे किले के अन्दर प्राकृतिक रूप से निरन्तर चलता ही रहता है। हमारी इन्द्रियाँ भी दासता की प्रवृत्ति उत्पन्न करने में कोई कोर कसर नहीं उठा रखती। अस्तु, स्वयं को निरन्तर अभ्यास में रत रहकर परिष्कार के द्वारा अपने को निखारते रहने की आदत डालनी पड़ती है। यद्यपि यह भी प्राकृतिक ही है कि ढलान की तरफ प्रत्येक जीव यहाँ तक कि अजीवित वस्तु भी बड़े ही तेजी के साथ लुढ़कते हैं जबकि हमें निरन्तर, उत्तरोत्तर ऊँचा उठने में मनोदशा को नियंत्रित करना पड़ता है। अधोरेखर वचन शास्त्र के “आसक्ति” शीर्षक अध्याय के अनुसार महाप्रभु के द्वारा मनुष्य की प्रवृत्ति को, इच्छाओं को, उसके मानसिक अवस्था को, सदैव तीर की तरह सीधा होना चाहिये ताकि सद्लक्ष्य के प्रति बुद्धि सदैव तत्पर बनी रहे। अधोरेखर का सच्चा उपासक किसी भी परिस्थिति में भयभीत अथवा विचलित नहीं होता, क्योंकि भय का कारक गलत मार्ग पर उसके कदम ही नहीं जाते। वह ईश्वर के प्रति, अधोरेखर के प्रति भयभीत होकर उनकी भक्ति नहीं करता। बल्कि वह तो माँ गुरु के अंक में, प्रेमालिंगन में अपने को पड़ा पाता है। उसकी अपने इष्ट के प्रति मातृ वत्सल अनुरक्ति बनी रहती है। जो बुद्धि विवेक को विपरीत दिशा में जाने ही नहीं देती। यद्यपि हमारी मन की चंचलता, हमारी असफलता, हमें कम्पित करती रहती है। वह सत्य को त्याज्य कर असत्य का आचरण कर भटकाव की स्थिति में अक्सर पहुँच जाती है। जिससे ऐसा व्यक्ति कभी पूर्णता को प्राप्त ही नहीं कर पाता बल्कि विपरीत दिशा में चलकर अपनी हानि स्वयं कर बैठता है। यहाँ तक कि उच्चशृंखल व्यक्ति तो महान आत्माओं का भी उपहास करने में नहीं

श्रेष्ठ पृ. 3 पर

अधोरेखर सूत्र

जमीन और आकाश के बीच में जो खाली है, यह आकाश है, इसमें न मालूम कितना-कितना आत्माएँ उत्पन्न होती हैं, विलीन होती हैं। यह भगवती का उदर है। हम और आप, या सभी प्राणीमात्र का विकासस्थली है।

अधोरेखर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी